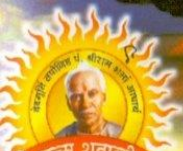


जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- ६५

जीवन देवता की अनिवार्य साधना

(प्रवचन)



जीवन देवता की अनिवार्य साधना

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो ! भाइयो !! उपासना की महत्ता अपरंपार है। भगवान के नजदीक आप बैठें, उपासना करें, तो देखेंगे कि उनके सारे गुण आप में आते चले जाते हैं। बिजली को जो छूता है, तो उसके अंदर करंट आ जाता है। भगवान को जो छुएगा, भगवान से उसमें करंट आ जाएगा। दो तालाबों को आपस में जोड़ दें, तो नीचे वाले तालाब का लेवल बढ़ता हुआ चला जाता है और दोनों का तल एक हो जाता है। भगवान और भक्त एक हो जाते हैं। सच तो यह है कि भक्त भगवान से भी बड़े हो जाते हैं, क्योंकि भगवान भक्त का उत्साह बढ़ाना चाहते हैं और दूसरे कामों में उपयोग करना चाहते हैं। शबरी के जूठे बेर भगवान

ने खाए थे न! गोपियों के यहाँ भगवान छछ माँगने गए थे न! बलि के दरवाजे पर बावन अंगुल के बन करके भगवान गए थे न! कर्ण के दरवाजे पर सोना माँगने के लिए साधु और भिखारी का रूप बनाकर गए थे न! ये बड़प्पन है! भक्त का बड़प्पन!! भृगु ने भगवान के सीने में लात मारी थी, कहाँ कैसे भगवान हैं! जो अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं रखते और भगवान ने महर्षि भृगु की लात के निशान को अपनी छाती पर अभी तक सुरक्षित रखा हुआ है। विष्णु की मूर्तियों में महर्षि भृगु की लात का निशान बना रहता है। महर्षि भृगु बड़े थे, भगवान से। भक्त बड़ा होता है भगवान से, पर सही भक्त होना चाहिए। सही भक्त की हम आपको पहचान बता चुके हैं और ये बता चुके हैं कि भक्त को भगवान के अनुशासन पर निर्भर रहना चाहिए; भगवान को अपनी मरजी पर चलाने की बात नहीं सोचनी चाहिए, अपनी मनोकामना की बाबत ध्यान नहीं रखना चाहिए, कि हमारी मनोकामना खत्म कर दी गई। भक्त अपनी

मनोकामना खत्म कर देते हैं और भगवान की मनोकामना को अपने ऊपर बनाए रहते हैं।

नारद एक बार मनोकामना माँगने के लिए भगवान के पास गए और कहने लगे—एक युवती का स्वयंवर होने वाला है। मुझे आप राजकुमार बना दीजिए, सुंदर बना दीजिए, ताकि मेरी अच्छी लड़की से शादी भी हो जाए और मैं संपन्न भी हो जाऊँ। दहेज जो मिलेगा, उससे मालदार भी हो जाऊँगा। मालदार बनने की और संपन्न बनने की दो ही मनोकामनाएँ हैं और क्या मनोकामना है? एक लोभ की मनोकामना है, एक मोह की मनोकामना है। दोनों के अलावा और कोई तीसरी मनोकामना दुनिया में है ही नहीं। इन दोनों मनोकामनाओं को लेकर जब नारद भगवान के यहाँ गए, तो भगवान के अचंभे का ठिकाना नहीं रहा। भक्त कैसा? जिसकी मनोकामना हो। मनोकामना होगी तो भक्त नहीं होगा, भक्त होगा तो मनोकामना नहीं होगी। दोनों का निर्वाह एक साथ नहीं हो सकता। जहाँ अँधेरा होगा, वहाँ उजाला

नहीं रहेगा, जहाँ उजाला रहेगा, वहाँ अँधेरा नहीं होगा। दोनों का एक साथ जोड़ कैसे होगा ? इसलिए भगवान सिर पर हाथ रख करके जा बैठे। अरे ! तुम क्या कहते हो नारद ! लेकिन नारद ने अपना आग्रह जारी रखा—नहीं, मेरी मनोकामना पूरी कीजिए, मुझे मालदार बनाइए, मेरी विषय वासना पूरी कीजिए। भगवान चुप हो गए। नारद ने सोचा—भगवान ने चुप्पी साध ली है, शायद मेरी बात को मान लिया होगा। भगवान को माननी चाहिए भक्त की बात, ऐसा ख्याल था। बस वो चले गए स्वयंवर में। स्वयंवर में जाकर बैठे। राजकुमारी ने देखा—कौन बैठा है ? नारद जी का और भी बुरा रूप बना दिया, बंदर जैसा। राजकुमारी देखकर मजाक करने लगी, हँसने लगी। यह बंदर जैसा कौन आ करके बैठा है ? बस, उसको माला तो नहीं पहनाई और दूसरे राजकुमार को माला पहना दी। नारद जी दुखी हुए, फिर विष्णु भगवान के पास गए, गालियाँ बकने लगे। विष्णु ने कहा—अरे नारद ! एक बात तो सुन। हमने किसी

भक्त की मनोकामना पूरी की है क्या आज तक! इतिहास तो ला भक्तों का उठा करके। जब से सृष्टि बनी है और जब से भक्ति का विधान बना है, तब से भगवान ने एक भी भक्त की मनोकामना पूरी नहीं की है। हर भक्त को मनोकामना का त्याग करना पड़ा है और भगवान की मनोकामना को अपनी मनोकामना बनाना पड़ा है। बस, कल हम यह बता रहे थे कि आप अगर उपासना कर सकते हों, तो आप भी भगवान के बराबर हो सकते हैं। उनसे बड़े भी हो सकते हैं। भगवान के गुण और आपके गुण एक बन सकते हैं, आप महापुरुष हो सकते हैं; महामानव हो सकते हैं, ऋषि हो सकते हैं, देवात्मा हो सकते हैं और अवतार हो सकते हैं, अगर आप उपासना का ठीक तरीके से अवलंबन लें तो। कल का यह विषय था।

आज दूसरी बात बताते हैं आपको। अपनी पात्रता का विकास करना पड़ेगा, पात्र इसके लिए बनना पड़ेगा। पात्र अगर न होंगे तब? शादी कोई

लड़की करना चाहे किसी अच्छे लड़के से और वह बुढ़ी हो तब ? गूंगी, बहरी, अंधी हो तब ? तो कौन शादी करेगा ? इसीलिए पात्रता बहुत जरूरी है। कल हमने कहा था न—उस दिन आपसे कहा था, गड़ढा होना जरूरी है, बादलों की कृपा प्राप्त करने के लिए। बादल तो बरसते ही रहते हैं। उनकी कृपा तो सबके ऊपर है। गड़ढा जहाँ होगा, वहीं तो पानी जमा होगा न। गड़ढा न होगा तब ? सूरज की कृपा तो हरेक के ऊपर है; लेकिन जिसकी आँखें खराब हो गई हों, उसके लिए क्या कर सकता है, सूरज ! दुनिया में एक से एक सुहावने दृश्य दिखाई पड़ते हैं; पर एक से एक सुहावने दृश्य को देख कौन सकेगा ? जिसकी आँखों का तिल साबुत होगा, वही तो देखेगा ? जिसकी आँखों का तिल साबुत नहीं है, तो कैसे देखेगा ! जरा आप ही बताइए। जिसके कानों की झिल्ली खराब हो गई है, दुनिया में एक से एक बढ़िया संगीत और आवाज निकलती है, पर कानों की झिल्ली खराब हो जाए, तब दुनिया के संगीत

सुनने के लिए आदमी की कोई सहायता सेवा नहीं कर सकता। आदमी का दिमाग खराब हो जाए तब ? तब एक से एक बढ़िया परामर्श देने वाले, एक से एक सहायता देने वाले क्या कर सकते हैं ? कोई सहायता नहीं कर सकता। किसकी ? जिसका दिमाग खराब हो गया है। क्या करेंगे ? अपना दिमाग तो सही हो, अपनी झिल्ली तो सही हो, अपनी आँखों का तिल तो सही हो। ये सही होंगे, तो फिर सूरज भी सहायता करेगा, वायु भी सहायता करेगी। पाँच तत्त्व दुनिया में हैं, जिसमें से हवा भी है, रोशनी भी है, सूरज भी है—ये सब आदमी की सहायता करते हैं। इन्हीं की सहायता से तो आदमी जिंदा है, लेकिन आदमी जिंदा तो होना चाहिए। मर गया होगा तब, साँस क्या करेगी ? बहुत अच्छी प्रातःकाल की हवा है, हवा फेफड़ों को मिलनी चाहिए, पर लेगा तो तभी, जब वह जिंदा हो। जिंदा नहीं हो, तो क्या करेगी हवा ? एक से एक बढ़िया आहार हैं और भोजन हैं, लेकिन आहार और भोजन के होते हुए

अगर किसी आदमी का पेट खराब हो जाए तब ? आप खिला करके क्या करेंगे ? और उलटा पेट में दरद हो जाएगा । आप पौष्टिक पदार्थ दीजिए, मलाई, मिठाई दीजिए । अगर पेट खराब है, पचता नहीं है, तो मलाई मिठाई क्या करेगी ? और जहर पैदा कर देगी । मेरा मतलब पात्रता से है ।

आप ध्यान दीजिए और गौर कीजिए । पात्रता का विकास किए बिना न संसार में रास्ता है और न पात्रता का विकास किए बिना आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई रास्ता है । आपको अफसर बनना है ? पब्लिक सर्विस कमीशन के सामने जाइए और अपनी पात्रता साबित कीजिए । अच्छा डिवीजन लाइए और अच्छे नंबर लीजिए । आपको अच्छा स्थान मिल सकता है । नहीं साहब ! हम तो परीक्षा से दूर रहेंगे, हम तो भगवान जी की आरती गाएँगे, हम तो पब्लिक सर्विस कमीशन की आरती गाएँगे, हमको अफसर बना दीजिए । नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । पात्रता विकसित करना बहुत जरूरी है । पात्रता का इससे

क्या मतलब है ? पात्रता का अर्थ होता है—जीवन को परिष्कृत करना। जीवन को परिष्कृत करने के लिए साधना करनी पड़ती है। भगवान को प्राप्त करने के लिए उपासना और अपने आप को पात्र बनाने के लिए साधना। साधना किसकी ? अपनी। अपनी से क्या मतलब ? अपनी से मतलब यह है कि जो हमारे भीतर जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कार जमे पड़े हैं, उनका परिशोधन करना पड़ेगा, बचकानापन दूर करना पड़ेगा। बच्चों को तो कोई कह नहीं सकता। बच्चा कहीं भी पेशाब कर देता है, कहीं भी खड़ा हो जाता है, कुछ भी करने लगता है, कोई भी चीज फैला देता है, लेकिन बड़ा आदमी तो न केवल स्वयं सँभल के रहता है, वरन दूसरों की चीजों को भी सँभालकर रखता है। ये बड़प्पन की निशानियाँ हैं। पात्रता से मेरा मतलब इसी से है। चिंतन की दृष्टि से सुसंस्कृत और व्यवहार की दृष्टि से सज्जन और सभ्य—इन दो विशेषताओं को अपने भीतर पैदा करे आदमी तो ये माना जाएगा

कि उसने पात्रता का विकास कर लिया। पात्रता का विकास अगर कर लिया है, तो संसार में भी इज्जत और भगवान के यहाँ भी इज्जत। पात्रता का अगर आपने विकास नहीं किया, तो संसार में भी उपहास और तिरस्कार और भगवान के यहाँ भी नाराजगी। आप कहीं भी, कुछ भी नहीं पा सकते। पात्रता की ओर ध्यान एकाग्र कीजिए। पात्रता आपके हाथ की बात है। उपासना भगवान का अनुग्रह, भगवान के हाथ की बात है; पर साधना तो आपके हाथ की बात है। अपने आप को सुसंस्कारी बनाने के लिए जो भी मुमकिन हो, आप पूरी शक्ति से और पूरी ईमानदारी से मेहनत कीजिए। आपको सुगढ़ बनना है। हमारा जीवन अनगढ़ है; चौरासी लाख योनियाँ घूमने के बाद में न जाने कितने कुसंस्कार हमारे पास जमा हैं और वे कुसंस्कार अगर इसी तरीके से जमा रहे, तो दीवार के तरीके से खड़े रहेंगे और फिर हमको आगे नहीं बढ़ने देंगे और ये हथकड़ियों और बेड़ियों के तरीके से रास्ता रोक लेंगे, न हमको

ऊँचा उठने देंगे, न आगे बढ़ने देंगे। इसलिए कुसंस्कारों के विरुद्ध जद्दोजहद करना, यह हमारा काम है। साधना इसी का नाम है। साधना करने से आपने देखा है न, कितनी घटिया-घटिया चीजें, मामूली चीजें, क्या से क्या बन जाती हैं। आदमी पेड़ों को काटता है, छाँटता है, कलम लगाता है। जंगली पेड़ और माली के बगीचे के लगाए हुए पेड़, उनको आपने देखा नहीं है क्या? कैसे बढ़िया-बढ़िया गुलाब के फूल आते हैं। रंग-बिरंगे फूल आते हैं। ये माली के हाथ की करामात है। क्यों? उन्हीं गुलाबों को जो जंगल में रहते हैं, खुशबू भी नहीं आती, बहुत छोटे-छोटे फूल होते हैं, उन्हीं गुलाबों को ऐसा बना देता है। इसका नाम क्या है? इसका नाम कलम लगाना कहिए, सुसंस्कारिता कहिए अथवा माली की साधना पौधे के साथ और आपकी जीवात्मा की साधना अपने जीवन के साथ। जीवन को अगर परिष्कृत बना लें, व्यक्तित्व को अगर ऊँचा आप उठा लें, फिर मजा आ जाएगा।

फिर देखिए आपकी हैसियत कितनी बड़ी हो जाती है और आपकी जितनी हैसियत है उसी हिसाब से आपको कीमत मिलनी शुरू हो जाएगी। आप एम० ए० तक पढ़े हैं तो ज्यादा पैसा मिलेगा, मैट्रिक तक पढ़े हैं तो कम पैसा मिलेगा और बिना पढ़े आदमी हैं तो उससे भी कम पैसा मिलेगा। पात्रता बढ़ाइए न, कीमत बढ़ाइए न अपनी। और जो चाहते हैं पाइए। कीमत आप बढ़ाना नहीं चाहते, माँग करके लेना चाहते हैं। प्रार्थना करेंगे—माँगेंगे! माँगेंगे!! माँगेंगे!!! अरे बाबा! माँगने से तो पाँच पैसे भी नहीं मिलते, उसमें भी पात्रता की जरूरत होती है। अंधा, कोढ़ी होगा, तो शाम तक उसकी भीख में दो रुपए आ जाएँगे, हट्टा-कट्टा होगा, तो कोई देगा नहीं, गालियाँ और सुनाएगा—तुझे शरम नहीं आती बेशरम! भीख माँगने चला आया। काम, मेहनत, मजदूरी क्यों नहीं करता? पात्रता तो भिखारी को भी चाहिए, फिर सामान्य लोगों का तो पात्रता के बिना दुनिया में कुछ नहीं चलता। इसलिए पात्रता

के लिए अपने गुण, अपने कर्म, अपने स्वभाव इन तीनों चीजों को परिष्कृत करना हर आदमी के लिए बेहद जरूरी है।

आध्यात्मिकता के रास्ते पर, जहाँ भगवान का पल्ला पकड़ना पड़ता है, वहाँ दूसरा वाला कदम यह उठाना पड़ता है कि हमारी जीवन की साधना क्रमबद्ध है कि नहीं, हमने अपने को साध लिया है कि नहीं। साध लेने से आदमी का मूल्य बढ़ जाता है। आप जानते हैं न! साँप को मदारी लोग पाल लेते हैं और सिखा लेते हैं। वह साँप जो आमतौर से हर आदमी को काट खाता है, वही साँप मदारी के बाल-बच्चों के गुजारे का माध्यम बन जाता है। बंदर के बारे में आप जानते हैं न। बंदर कितना वाहियात! किसी के कपड़े उठा के भाग जाता है, किसी को काट खाता है, किसी को क्या करता है, लेकिन वही बंदर पाल लिया जाता है, सिखा लिया जाता है, साध लिया जाता है, तो मदारी के बाल-बच्चों का गुजारा करने के लिए वही सबसे बड़ा स्रोत हो जाता

है। रीछ जानते हैं, कैसा खौफनाक होता है। लेकिन रीछ जब पाल लिए जाते हैं, साध लिए जाते हैं, तब रीछ ही अपने पालने वाले का गुजारा कर देता है। सरकस के बारे में आप जानते हैं न। शेर कितना भयंकर और दूसरे जानवर कितने भयंकर! लेकिन रिंगमास्टर के द्वारा जब साध लिए जाते हैं, तो सरकस के मालिक को एक-एक दिन में हजारों रुपए कमा करके देते हैं। शेर, जो किसी को भी मार डाल सकते हैं, मालिक को दो-दो हजार रुपया रोज कमा करके देते हैं। ये कैसे हो सका? साधना के द्वारा। साधना जैसे जंगली जानवरों की, की जा सकती है, उसी के तरीके से जीवन की भी की जा सकती है। साधना अगर न की जाए तब? आदमी प्राकृतिक रूप से बड़ा वाहियात है, वनमानुष है। डारविन ने कहा था कि इनसान बंदर की औलाद है, बंदर नहीं है, वह बंदर का भाई-बंधु है। वनमानुष होते हैं, जंगलों में रहते हैं, देखे हैं न आपने? न इनको कपड़ा पहनना आता है, न इनकी कोई सभ्यता है, न इनकी

कोई बातचीत है। ऐसे किसी तरीके से जैसे बंदर पाल लिए जाते हैं, ऐसे एक वनमानुष के तरीके से वे लोग भी गुजारा कर लेते हैं, जिनको लोग जंगली कहते हैं। जंगली लोगों को नर-पशुओं में गिना जाता है।

रामू के बारे में सुना है न आपने! रामू नाम का एक लड़का था। आगरा जिले के भेड़ियों की माँद में पाया गया, इनसान का बच्चा था। भेड़िये उठा के ले गए, पर खाया नहीं, पाल लिया उन्होंने। शिकारियों ने भेड़ियों को मार करके उस मनुष्य के बच्चे रामू को पकड़ लिया। फिर क्या हुआ? वह जंगली जानवरों के तरीके से रहता था। बोलता भी वैसे ही था, चलता भी वैसे ही था। कच्चा मांस खाता था। उसको कुछ भी नहीं आया। उसको लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में भरती कर दिया गया। चौदह वर्ष की उम्र तक जिया, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी उसे कुछ नहीं आया, कुछ बन नहीं सका। क्यों? क्योंकि छोटी उम्र में संस्कार

नहीं डाले गए थे। संस्कार डालना आदमी के लिए बेहद जरूरी है। संस्कार के बिना आदमी स्वभाव का कैसा हो सकता है? फूहड़ है, अनगढ़ है, बेहूदा है। इसलिए आपको अपने आपको संस्कारवान स्वयं बनाना चाहिए। कौन बनाएगा? दूसरा कहाँ तक बनाएगा? बचपन में तो होता भी है। गुरुकुलों में ऋषि लोग छोटे बच्चों को महापुरुष बनाने की शिक्षा देते थे। आरण्यकों में वानप्रस्थों की भरती करने के बाद में शिक्षण देने की बात भी चलती है, पर सामान्य जीवन कैसे चले? बताइए आप। सामान्य जीवन में कौन पीछे लगेगा आपके? एक-एक गलती, एक-एक विचारधारा, एक-एक भूल के बारे में कौन सुधार करेगा? इसलिए ये काम आपको स्वयं ही करना पड़ेगा। आप ही अपने गुरु हैं, आप ही अपने शिक्षक हैं और आप ही अपने साधक हैं, आप ही अपने मार्गदर्शक हैं। अगर आप यह समझ लें, तो आपके जिम्मे एक ही काम रह जाता है कि आप अपने आप को सुधारिए, आप अपने आप को

सँभालिए, आप अपने आप को ठीक कीजिए और अपने भगवान के नजदीक जाइए।

भगवान क्या है ? बताइए आप। एक भगवान तो वह है जो सारे विश्व में छाया हुआ है, सारे नियमों की व्यवस्था बनाता है। वे एक तरह के नियम हैं, कायदा और कानून हैं, जिसको हम परब्रह्म कहते हैं। एक और भी ब्रह्म है, जिसको आपको अपने ढंग से बनाना है, वह कौन सा परब्रह्म है ? अँगरेजी में इसको सुपर कांशस (सुपर चेतन) कहते हैं। वेदांत की भाषा में इसको 'स्व' कहा गया है, आत्मा कहा गया है। **आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मंतव्यः निदिध्यासितव्यः।** अरे लोगो ! अपने आप को जानो, अपने आप को समझो, अपने आप को सुधारो, अपने आप को ठीक करो। यह कैसे हो सकता है ? अपने आप। अपने आप से क्या मतलब ? अपने आप से मतलब है—सुपर चेतन से, जो हमारे भीतर है, जिसके बारे में शुरू में बताया गया है। भीतर के अंतःकरण में व्यक्तित्व

है, जिसमें कि गुण, कर्म और स्वभाव भरे पड़े हैं, जिसमें विश्वास और मान्यताएँ भरी पड़ी हैं, जिसमें आदतें भरी पड़ी हैं। आदतों को आपको ठीक करना है। अपनी मान्यताओं में, जिसमें धिनौनेपन घुसे बैठे हैं, उनमें आपको सुधार करना है, शुरू से लेकर अंत तक देखभाल करनी है, उनको ठीक करना है। आपको आत्मदेव की उपासना करनी है। उपासना के बारे में जो हम कल कह रहे थे, वास्तव में वह आपका आत्मदेव है। अपने आप की उपासना किया कीजिए। अपने आप की उपासना जो कर लेते हैं, वह अपने आप ही, अपनी साधना से ही, अपने ही दबाव से भगवान बना लेते हैं। मीरा ने अपने ही दबाव से पत्थर को गिरिधर गोपाल बना लिया और एकलव्य ने अपने दबाव से ही मिट्टी के पुतले को द्रोणाचार्य बना दिया था और रामकृष्ण परमहंस ने अपने ही व्यक्तित्व के दबाव से पत्थर को काली बना दिया था। अपने आप के व्यक्तित्व का उजागर होना और स्वच्छ, निर्मल होना, यह

बहुत बड़ी बात है। इसके लिए आपको क्या करना चाहिए? चौबीसों घंटे आपको ध्यान रखना चाहिए। क्या ध्यान रखना चाहिए? यह कि हमारा जीवन किस तरीके से ठीक बन सकता है? आपको अपने कर्तव्यों पर ध्यान देना चाहिए। आपको अपने ज्ञान को परिष्कृत करना चाहिए और अपनी भक्तिभावना का विकास करना चाहिए। तीन योग हैं न! एक योग का नाम है—ज्ञानयोग! इसका अर्थ है—आप वास्तविकता को समझें। आपने बाहर को समझा है, चीजों को समझा है, खेती-बाड़ी को समझा है, पैसे को समझा है, दुकान को समझा है, मुहल्ले वालों को समझा है, संतान को समझा है, फिर अपने आप को क्यों नहीं समझा? अगर आप जीवन को और अपने आप को समझ सकते हों, तो इसका नाम 'ज्ञानयोग' होगा। अगर आपने अपने फर्ज और कर्तव्यों को समझ रखा हो तब? फर्ज का ज्ञान नहीं, कर्तव्य का ज्ञान नहीं, कोल्हू के बैल के तरीके से सारे दिन मरते रहते हैं, दूसरों की देखा-देखी

वासनाओं के दबाव में। मेहनत कम नहीं करते। बहुत मेहनत करते हैं, पर कर्तव्यपालन? कर्तव्यपालन अलग चीज है। हमारे फर्ज और हमारी ड्यूटियाँ कहाँ हैं? ड्यूटियाँ और हमारे फर्ज जहाँ कहीं भी हमको बुलाते हैं, वहाँ हमको जाना चाहिए। इसका नाम कर्मयोग है और भक्तिभावना? भक्तिभावना मुहब्बत को कहते हैं, प्यार भगवान को किया जाता है। उपासना भगवान की, की जाती है। प्रेम भगवान को किया जाता है; पर भगवान तक सीमित नहीं रखा जाता। अखाड़े में कसरत करते तो हैं, पर अखाड़े तक, उस कसरत की जो शक्ति-संचय है, उसको खरच थोड़े ही कर देते हैं। वह तो बाजार में करना पड़ता है, कहीं और करना पड़ता है। भगवान की भक्ति का अभ्यास करते हैं, भगवान से हम प्रेम करते हैं, उपासना करते हैं। अगर उपासना के बाद में हमारी भक्ति का विकास हुआ तो, तब प्राणियों में इसका उपयोग करना पड़ेगा, मनुष्यों में उपयोग करना पड़ेगा, सबमें उपयोग करना पड़ेगा। प्यार से

अपने आप को, हरेक को सराबोर कर देना पड़ेगा। प्यार अपने शरीर से कीजिए, ताकि उसको अच्छे तरीके से सुरक्षित रख सकें। प्यार अपनी अंतरात्मा से कीजिए, ताकि इसका कल्याण करने में आप समर्थ हो सकें। प्यार अपने मस्तिष्क के चिंतन की मशीन से कीजिए, ताकि प्यार द्वारा सही विचार करें और अपने आप को तहस-नहस न होने दें। प्यार अपनी बीबी को कीजिए, ताकि उसका व्यक्तित्व आप निखार सकें। प्यार आप बच्चों से कीजिए, ताकि उनको संस्कारवान बना सकें। प्यार अपने मुल्क को कीजिए, देश को कीजिए, धर्म और संस्कृति को कीजिए, ताकि उनको इस लायक बना सकें, कि वह सम्मानास्पद हों, उनका मजाक नहीं उड़ाया जाए। हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति के बारे में लोग तरह-तरह के लांछन न लगा सकें, ऐसा कीजिए न! भक्ति का अर्थ प्यार होता है। प्यार का अर्थ सेवा होता है। सेवा कीजिए, सेवा। अगर भक्ति को समझ सकते हों, तब फिर यह

क्या हो जाएगा? फिर यह भक्तियोग हो जाएगा। अपने जीवन की वास्तविकता को समझ सकें, तो ये ज्ञानयोग हो जाएगा। जब अपने फर्ज और ड्यूटी को सब कुछ मान लें, इस बात पर ध्यान नहीं दें कि दूसरा आदमी क्या कहता है और क्या सलाह देता है, तब इसको कर्मयोग कहेंगे। इन तीनों बातों का ध्यान रखेंगे, तब आपका व्यक्तित्व निखरता हुआ चला जाएगा। जीवन की साधना के लिए इन बातों पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

हमारा जीवन पारस है, हमारा जीवन कल्पवृक्ष है, हमारा जीवन अमृत है, हमारा जीवन कामधेनु है। आप जो भी चाहें, इस जीवन को बना सकते हैं, लेकिन बनाना तो आपको ही पड़ेगा। आप ही बनाएँगे, तभी बनेगा। अपनी साधना आप कीजिए। अपने आपके विरुद्ध बगावत खड़ी कर दीजिए। अपने जन्म-जन्मांतरों को तोड़-मरोड़कर फेंक दीजिए और जो अच्छाई आपके भीतर नहीं है, जो विशेषताएँ अभी तक पैदा नहीं कर सके हैं, उन गुण, कर्म

और स्वभाव के बारे में आप अभी तक अभावग्रस्त हैं, कृपा करके वे ठीक कीजिए, उनको सुधारिए। यह पुरुषार्थ कीजिए। बुराइयों को छोड़ने का पुरुषार्थ, अच्छाइयों को बढ़ाने का पुरुषार्थ। पराक्रम अगर आप करेंगे, तो किस तरीके से? आगे बढ़ने के लिए दो कदम बढ़ाने पड़ते हैं। एक कदम के बाद दूसरा, दूसरे के बाद फिर पहला। ऐसे ही आपको अपनी कमजोरियों और बुराइयों को दूर करने की जद्दोजहद करनी पड़ेगी और अपनी अच्छाइयों को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। यह दो काम करते हुए चले जाएँगे, तो आपकी जीवन साधना पूर्ण हो जाएगी। जीवन साधना जिस हिसाब से आपकी पूर्ण होगी, आप देखेंगे सारा समाज आपका सहयोग करता है, अंतरात्मा आपका सहयोग करती है, भगवान आपका सहयोग करते हैं, पात्रता जैसे ही विकसित होती चलेगी। इसलिए मैंने कल कहा था—आपके भीतर फूल जैसे ही खिलना शुरू हो जाएगा, वैसे ही आपके ऊपर भौर आने शुरू हो

जाएँगे, तितलियाँ आनी शुरू हो जाएँगी, बच्चे आपको ललचाई आँखों से देखने लगेंगे। भगवान अपेक्षा करेंगे कि ये फूल हमारे गले में हैं, सिर पर होते तो कैसा अच्छा होता ? कृपा करके कीजिए, साधना कीजिए। साधना के चमत्कार देखिए। साधना से सिद्धि मिलती है—इस सिद्धांत को आपको जीवन में प्रयोग करके दिखाना है, तभी फायदा उठा सकेंगे, जिसके लिए कल्पसाधना में आप आए हैं। हमारी बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥



साधना से सिद्धि

वेदांत दर्शन के अनुसार परिष्कृत आत्मा ही परमात्मा है। तत्त्वदर्शन के अनुसार इसी काय-कलेवर में समस्त देवताओं का निवास है। परब्रह्म की दिव्य क्षमताओं का समस्त वैभव जीवब्रह्म के प्रसुप्त संस्थानों में समग्र रूप से विद्यमान है। यदि उन्हें जगाया जा सके तो विज्ञात अर्तीन्द्रिय क्षमताएँ और अविज्ञात दिव्य विभूतियाँ जाग्रत, सक्षम एवं क्रियाशील हो सकती हैं। तपस्वी, योगी, ऋषि, मनीषी, महामानव सिद्धपुरुष ऐसी ही विभूतियों से संपन्न देखे गए हैं। तथ्य शाश्वत और सनातन हैं। जो कभी हो चुका है, वह अब भी हो सकता है। जीवन देवता की साधना से ही महासिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। कस्तूरी के हिरण जैसी बात है। बाहर खोजने में थकान और खीझ ही हाथ लगती है। शांति तब मिलती है जब उस सुगंध का केंद्र अपनी ही नाभि में होने का पता चलता है। परमात्मा के

साथ संपर्क स्थापित करने के लिए अन्यत्र खोज-बीन करने की योजना व्यर्थ है। वह एक देशकाल तक सीमित नहीं है, कलेवरधारी भी नहीं, उसे अति निकटवर्ती क्षेत्र में देखना हो तो वह अपना अंतःकरण ही हो सकता है। समग्र जीवन इसी की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।

गीताकार ने उस परब्रह्म को श्रद्धा में ही समाहित बताया है और कहा है कि जिसकी जैसी श्रद्धा हो वह वैसा ही है, जो अपने को जैसा मानता है वह वैसा ही बन जाता है। यदि अपने को तुच्छ और हेय समझते रहा जाएगा तो व्यक्तित्व उसी ढाँचे में ढल जाएगा। जिसने अपने अंदर में महानता आरोपित की है उसे अपना अस्तित्व मानवी गरिमा से ओत-प्रोत दिखाई पड़ेगा।

परमात्मा सब कुछ करने में समर्थ है। उसमें समस्त विभूतियाँ विद्यमान हैं। इसी शास्त्रवचन को यों भी कहा जा सकता है कि उसका प्रतीक-प्रतिनिधि

उत्तराधिकारी युवराज भी, अपने सृजेता की विशेषताओं से संपन्न है। कठिनाई तब पड़ती है जब आत्मविस्मृति का अज्ञानांधकार अपनी सघनता से वस्तुस्थिति को आच्छादित कर लेता है। अँधेरे में झाड़ी को भूत और रस्सी को साँप के रूप में देखा जाता है। जिधर भी कदम बढ़ाया जाए उधर ही ठोकरें लगती हैं; किंतु यदि प्रकाश की व्यवस्था बन जाए तो सब कुछ यथावत दिखाई पड़ेगा। आत्मबोध को उस प्रकाश का उदय माना जाता है, जिसमें अपने सही स्वरूप का आभास भी मिलता है और सही मार्ग ढूँढ़ने में भी विलंब नहीं लगता।

भेड़ों के झुंड में पले सिंहशावक की कथा सर्वविदित है। अपने इर्द-गिर्द का वातावरण और प्रचलन मनुष्य को अपने ही समूह में घसीट ले जाता है पर जब आत्मबोध होता है, तब पता चलता है कि आत्मसत्ता 'शुद्धोऽसि-बुद्धोऽसि-निरंजनोऽसि' के सिद्धांत को अक्षरशः चरितार्थ करती है। "मनुष्य

भटका हुआ देवता है"—इस कथन में उसका सही विश्लेषण देखा जा सकता है। यदि भटकाव दूर हो जाए तो समझना चाहिए कि समस्त समस्याओं का हल निकल आया। समस्त भवबंधनों से छुटकारा मिल गया। मोक्ष और कुछ नहीं अपने संबंध में जो अचिंत्य चिंतनवश भूल हो गई है, उससे त्राण पालने का परम पुरुषार्थ है। मकड़ी अपने लिए जाला अपने भीतर का द्रव निकालकर स्वयं ही बुनती है, स्वयं ही उसमें उलझती और छटपटाती है; किंतु देखा यह भी गया है कि जब उसे उमंग उठती है तो उस जाले को समेट-बटोरकर स्वयं ही निगल भी जाती है। हेय जीवन स्वकृत है। जैसा सोचा गया, चाहा गया, माना गया वैसी ही परिस्थितियाँ बन गईं। अब उसे बदलने का मन हो तो मान्यताओं, आकांक्षाओं और गतिविधियों को उलटने की देर है। निकृष्ट को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। क्षुद्र से महान बना जा सकता है।

‘साधना से सिद्धि’ का सिद्धांत सर्वमान्य है। देखना इतना भर है कि साधना किसकी की जाए? अन्यान्य इष्टदेवों के बारे में कहा नहीं जा सकता कि उनका निर्धारित स्वरूप और स्वभाव वैसा है या नहीं, जैसा कि सोचा, जाना गया है। इसमें संदेह होने का कारण भी स्पष्ट है। समूची विश्व-व्यवस्था एक है। सूर्य, चंद्र, पवन आदि सार्वभौम हैं। ईश्वर भी सर्वजनीन है, सर्वव्यापी भी फिर उसके अनेक रूप कैसे बने? अनेक आकार-प्रकार और गुण-स्वभाव का उसे कैसे देखा गया? मान्यता यदि यथार्थ है तो उसका स्वरूप सार्वभौम होना चाहिए। यदि वह मत-मतांतरों के कारण अनेक प्रकार का होता है, तो समझना चाहिए कि यह मान्यताओं की ही चित्र-विचित्र अभिव्यक्तियाँ हैं। ऐसी दशा में सत्य तक कैसे पहुँचा जाए? प्रश्न का सही उत्तर यह है कि जीवन को ही जीवित जाग्रत देवता माना जाए। उसके ऊपर चढ़े कषाय-कल्मषों का परिमार्जन करने का प्रयत्न किया जाए। अंगार पर राख की परत

जम जाने पर वह काला-कलूटा दिख पड़ता है, पर जब वह परत हटा दी जाती है तो भीतर छिपी अग्नि स्पष्ट दीखने लगती है। साधना का उद्देश्य इन आवरण-आच्छादनों को हटा देना भर है। इसे प्रसुप्ति को जागरण में बदल देना ही कहा जा सकता है।

अध्यात्म विज्ञान के तत्त्ववेत्ताओं ने अनेक प्रकार के साधना उपचार बताए हैं। यदि गंभीरतापूर्वक उनका विश्लेषण-विवेचन किया जाए तो प्रतीत होगा कि यह प्रतीक पूजा और कुछ नहीं, मात्र आत्म-परिष्कार का ही बाल-बोध स्तर का प्रतिपादन है। पात्रता और प्रखरता का अभिवर्द्धन ही योग और तप का लक्ष्य है। पात्रता एक चुंबक है जो अपने उपयोग की वस्तुओं-शक्तियों को अपनी ओर सहज की आकर्षित करती रहती है। मनुष्य में विकसित हुए देवत्व का चुंबक संसार में संव्याप्त शक्तियों और परिस्थितियों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। जलाशय गहरे होते हैं। सब ओर से पानी सिमटकर इकट्ठा होने के लिए उनमें जा पहुँचता

है। समुद्र में सभी नदियाँ जा मिलती हैं। यह उसकी गहराई का ही प्रतिफल है। पर्वत की चोटियों पर यदि शीत की अधिकता से बरफ जम भी जाए तो गरमी पड़ते ही पिघल जाती है और नदियों से होकर समुद्र में पहुँचकर रुकती है। इसी को कहते हैं 'पात्रता'। पात्रता का अभिवर्द्धन ही साधना का मूलभूत उद्देश्य है। ईश्वर को न किसी की मनुहार चाहिए और न उपहार। वह छोटी-मोटी भेंट-पूजाओं से या स्तवन गुणगान से प्रसन्न नहीं होता। ऐसी प्रकृति तो क्षुद्र लोगों की होती है। भगवान का ऐसा मानस नहीं। वह न्यायनिष्ठ और विवेकवान है। व्यक्तित्व में उत्कृष्ट आदर्शवादिता का समावेश होने पर जो गरिमा उभरती है उसी के आधार पर वह प्रसन्न होता और अनुग्रह बरसाता है। उसे फुसलाने-बर्गलाने का प्रयास करने वालों की बाल-क्रीड़ा निराशा ही प्रदान करती है।

ऋषि ने पूछा—**कस्मै देवाय हविषा विधेम ?**
अर्थात् हम किस देवता के लिए यजन करें ? उसका

सुनिश्चित उत्तर है—आत्मदेव के लिए। अपने आप को चिंतन, चरित्र और व्यवहार की कसौटियों पर खरा सिद्ध होना ही वह स्थिति है जिसे सौ टंच सोना कहते हैं। पेड़ पर फल-फूल ऊपर से टपककर नहीं लदते, वरन जड़ें, जमीन से जो रस खींचती हैं उसी से वृक्ष बढ़ता है और फलता-फूलता है। जड़ें अपने अंदर हैं, जो समूचे व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। इसी प्रखरता के आधार पर वे सिद्धियाँ-विभूतियाँ प्राप्त होती हैं। जिनके आधार पर आध्यात्मिक महानता और भौतिक प्रगतिशीलता के उभयपक्षीय लाभ मिलते हैं। यही उपासना, साधना और आराधना का समन्वित स्वरूप है। यही वह साधना है जिसके आधार पर सिद्धियाँ और सफलताएँ सुनिश्चित बनती हैं।

